पाठ – 4

सामाजिक सम्बंध : जिम्मेदारी निभाना

किशोर समाज का मेरुदण्ड है। किशोर के विविध संवेगों की पूर्ति तथा विकास जहाँ समाज में होता है, वहीं समाज भी किशोरों को समाज के लिए उपयोगी व्यक्तित्व के रूप में देखना चाहता है। किशोरों का चिन्तन, दृष्टिकोण, आचार एवं व्यवहार जैसा होगा समाज का स्वरूप भी उसी के अनुरूप विकसित होगा। समाज की समरसता, सहिष्णुता एवं परिपक्वता किशोरों को सृजन का पाठ पढ़ाते हैं।

समाज आपसी सम्बन्धों का ताना–बाना है। हम सब मिलकर समाज का निर्माण करते हैं एवं अपनी विभिन्न जरूरतों (पारिवारिक, शैक्षणिक, सामाजिक आदि) को पारस्परिक सम्बन्धों के आधार पर पूरा भी करते हैं। कोई भी अकेला व्यक्ति, समाज के सहयोग के बिना अपनी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। समाज एवं समुदाय में रहने वाले लोगों की जरूरतों को पूरा करने में परिवार, पड़ोसी, मित्र, संगठन, संस्था, जाति, धर्म, वर्ग आदि साझा रूप से सहयोगी होते हैं।

किशोर समाज के महत्वपूर्ण अंग होने के नाते समाज में अपनी भूमिका निर्धारित करते हैं। जन्म से मिले हुए सम्बन्ध जैसे– माता–पिता, भाई–बहन के अतिरिक्त नए सामाजिक सम्बन्धों को बनाने की शुरूआत भी करते हैं। इस तरह किशोरावस्था में आते–आते किशोर विभिन्न वर्गों, विभिन्न जातियों एवं विभिन्न धार्मिक समूहों से मिलने–जुलने लगते हैं। उन्हें अधिक गहनता से महसूस होने लगता है कि मेरा उद्‌गम क्या है ? मेरे माता–पिता की सामाजिक एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि क्या है ? मैं किस सामाजिक व आर्थिक वर्ग का हूँ ?

चित्र 4.1

यह पृष्ठभूमि हमें ''सम्बन्ध कहाँ बनाने'' और ''कहाँ नहीं बनाने'' के बन्धन में बाँधने लगती है। मोटे तौर पर किशोरावस्था में हमारे रिश्ते, आस–पास के परिवारों, अपने विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों आदि से अधिक बनते हैं। इन रिश्तों पर सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक स्थितियों का प्रभाव अधिक पड़ता है। यद्यपि ये सम्बन्ध रक्त सम्बन्धों पर आधारित नहीं होते फिर भी ये सम्बन्ध सच्चे होते हैं। किशोरों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले होते हैं। ये सामाजिक सम्बन्ध लगातार बदलते रहते हैं। इन सामाजिक रिश्तों का अच्छा व बुरा स्वरूप पूरी जिन्दगी पर असर डालता है। हमारी भावनाएँ, अपेक्षाएँ, रीति–रिवाज, परम्पराएँ आदि सामाजिक सम्बन्धों को प्रभावित करने लगती हैं। कभी तो ये सामाजिक सम्बन्ध अत्यधिक भावनात्मक हो जाते हैं और कभी हम समझ भी नहीं पाते कि वे कब टूट जाते हैं। किशोरावस्था में समाज में पाये जाने वाले विभिन्न सम्बन्ध पारिवारिक सम्बन्धों के मुकाबले अधिक संवेदनशील होते हैं। सामाजिक सम्बन्ध कभी बाधक तो कभी मददगार लगते हैं। कभी–कभी सामाजिक सम्बन्धों की प्राथमिकताएँ दुविधा में डाल देती हैं। कभी अपने जातिगत व धार्मिक रिश्ते दूसरे जाति और धर्म की तुलना में महत्त्वपूर्ण दिखने लगते हैं। प्रायः यह देखा जाता है कि किशोरों द्वारा महसूस किये जाने वाले जाति, वर्ग, धर्म आदि के सन्दर्भ में सवाल उन्हें दुविधा में डाल देते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि उन्हें समाज एवं समुदाय के साथ समरसता, समानता एवं सहिष्णुता स्थापित करने में कठिनाई होती है। इस सन्दर्भ में समाजशास्त्रियों के द्वारा किये गये अध्ययन यह साबित करते हैं कि किशोरों के विचार एवं व्यवहार को बनाने में परिवार, मित्रमण्डली, स्कूल, संचार माध्यम आदि संस्थाओं एवं समूहों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अगर इन संस्थाओं एवं समूहों के द्वारा जानकारी तर्क पूर्ण तरीके से नहीं दी जाती है तो किशोर अपने रास्ते को सही ढंग से निर्धारित नहीं कर पाते हैं, और गलत मार्ग

का चयन कर लेते हैं।

कई बार यह भी देखने में आता है कि कुछ लोग किशोरों को गैर जिम्मेदार, क्रोधी, लापरवाह, फैशन परस्त व असामाजिक समझते हैं। उनके व्यवहार व जीवन शैली को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है। किशोर भी अपनी इस छवि को बदलने का प्रयास नहीं करते। परिणामस्वरूप वे अनजाने में ही बड़ों के आक्रोश का शिकार हो जाते हैं। किशोरों के लिए भी ऐसे में उपयुक्त यही होगा कि वे संवाद के माध्यम से अपनी पहचान को धूमिल होने से बचायें। अतः सामाजिक रिश्तों में किशोरों को अपनी भूमिका को समझकर उसके अनुरूप व्यवहार करना चाहिए। किशोरों के आस–पास जाति, सम्प्रदाय, धर्म आदि के आधार पर तेजी से बढ़ती विभिन्न प्रकार की हिंसा उनके निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है। किशोरावस्था में भावनाओं का संवेग तार्किक चिन्तन की क्षमता को प्रभावित करता है अतः किशोरों पर समाज में घट रही सकारात्मक एवं नकारात्मक घटनाओं का प्रभाव पड़ता है। किशोरों पर नकारात्मक घटनाएँ व्यापक प्रभाव न डालें और भावनात्मक संवेगों के वशीभूत होकर कोई गलत कदम न उठाएँ इसके लिए जरूरी है कि किशोर स्वयं ऐसे विषयों पर तर्कबुद्धि का उपयोग कर बौद्धिक चिन्तन की ओर अग्रसर हों। क्या सही है और क्या गलत है ? इसका निर्णय धर्म, जाति, राजनैतिक विचारधारा से प्रेरित होकर नहीं वरन् तार्किक विवेचना के आधार पर हो। एक जिम्मेदार व्यक्ति के रूप में किशोर को ऐसी घटनाओं की पहचान करना, सवाल उठाना ओर उचित निर्णय लेना आना चाहिए, ताकि समाज एवं समुदाय के साथ समरसता, समानता व सहिष्णुता से रहना सीख सकें।

चित्र 4.2

महत्त्वपूर्ण बिन्दु

- मैं अपने समाज का एक महत्त्वपूर्ण व आवश्यक हिस्सा हूँ।
- मुझे अपने समाज में स्थित सभी वर्गों, धर्मों व जातियों के साथ सहिष्णुता व सामंजस्य बैठाकर व्यवहार करना है।
- सम्बन्धों में भावनात्मक तीव्रता अथवा कमी उन पर बुरा प्रभाव डालती है।

जानें, समझें और करें

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

• आपके विचार में समाज क्या है ?

.....

.....

• आप अपने लिए कैसे समाज का निर्माण करना चाहते/चाहती हैं ? इसके लिए आप क्या करेंगे/करेंगी ?

.....

.....

• आपके आसपास फैली हुई सामुदायिक हिंसा के लिए कौन उत्तरदायी हैं ? आप उसे कम करने के लिए क्या कर सकते/सकती हैं ?

.....

.....

2. उचित विकल्प पर सही का निशान लगाइए –

• मित्र बनाते समय आप सर्वाधिक ध्यान किस पर रखते/रखती हैं ?

(अ) जाति (ब) धन (स) धर्म (द) अपने विचार, रुचि और आदत

• जिस विकल्प पर आपने निशान लगाया है वही आपकी दोस्ती का आधार क्यों है ? अपने समर्थन में तर्क दें।

.....

.....

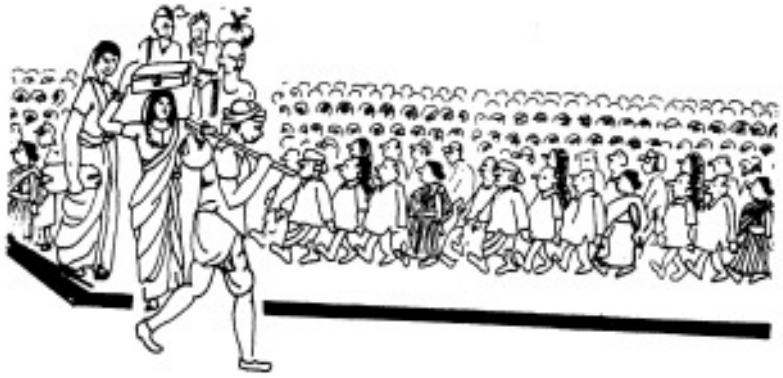

चित्र 4.3

"मानव की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है।" – महात्मा गांधी

"न तो काई किसी का मित्र है ओर न कोई शत्रु, व्यवहार से मित्र शत्रु तथा शत्रु मित्र बन जाते हैं।" – रस्किन